

Journal of Bhartiya Hindi Research Review

संत साहित्य में नारी की भूमिका और उसकी पहचान।

उषा

पीएचडी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

*अनुरूपी लेखक: उषा

Article Info

ISSN (online): XXXX-XXXX

Volume: 01

Issue: 04

July-August 2024

Received: 20-06-2024

Accepted: 10-07-2024

Page No: 09-10

सारांश

संत साहित्य में नारी का स्थान और उसकी भूमिका पर गहन विचार-विमर्श किया गया है। संत कवियों ने नारी को समाज के विभिन्न पक्षों से देखा और प्रस्तुत किया। कुछ संतों ने नारी को माया, मोह और बंधन का प्रतीक माना, जबकि अन्य ने उसे श्रद्धा, भक्ति और अध्यात्मिक उन्नति का स्रोत माना। इस शोध में नारी के प्रति संत साहित्य में विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण किया गया है, साथ ही नारी के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थान पर संत कवियों के विचारों का गहन अध्ययन किया गया है। यह शोध नारी के समाज में स्थान और उसकी भूमिका को संत साहित्य के आलोक में समझने का प्रयास है।

कुंजीशब्द: संत साहित्य, नारी, भक्ति, अध्यात्म, समाज, माया, श्रद्धा

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी का स्थान सदियों से विचार और बहस का केंद्र रहा है। धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सभी पहलुओं में नारी का एक विशिष्ट स्थान है। भारतीय संत साहित्य, जो भक्ति और अध्यात्म का महत्वपूर्ण स्रोत है, में नारी को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा गया है। संत कवियों ने अपने साहित्य में नारी के प्रति अपने विचारों को प्रकट किया है, जो समाज में नारी की स्थिति, उसके अधिकारों, और उसके योगदान पर गहरी दृष्टि प्रदान करते हैं।

संत साहित्य मुख्य रूप से भक्तिमार्ग पर आधारित है, जिसमें आत्मा और परमात्मा के मिलन की अवधारणा है। इसमें समाज के विभिन्न पक्षों का समावेश किया गया है, जिसमें नारी भी एक प्रमुख तत्व है। संत कवियों ने नारी को दो रूपों में देखा—पहला, नारी को भोग, माया और मोह का प्रतीक मानकर उसे सांसारिक बंधनों का कारण माना गया; और दूसरा, नारी को भक्ति, श्रद्धा, और मुक्ति के मार्ग का मार्गदर्शक और साधक माना गया।

यह शोध संत साहित्य में नारी के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों और उसकी प्रासंगिकता पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत प्रमुख संत कवियों के नारी संबंधी विचारों का विश्लेषण किया जाएगा और नारी की समाज में स्थिति को संत साहित्य के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया जाएगा।

चर्चा

1. संत साहित्य का परिचय और नारी का स्थान

संत साहित्य भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह साहित्य मध्यकालीन भारत में लिखा गया था, जब समाज विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संकटों से गुजर रहा था। संत कवियों ने भक्ति को समाज सुधार का एक महत्वपूर्ण साधन माना और धर्म, जाति, और वर्ग की सीमाओं को लांघकर भक्ति की एक समरसता की दिशा में कार्य किया। नारी का स्थान उस समय के समाज में कई विरोधाभासों से भरा हुआ था। एक ओर, उसे सम्मान और श्रद्धा के योग्य माना जाता था, वहीं दूसरी ओर उसे पितृसत्तात्मक समाज के बंधनों में जकड़ा हुआ पाया जाता था। संत कवियों ने नारी के इस स्थान को अपने दृष्टिकोण से देखा और अपने साहित्य में इसके विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया।

2. नारी का रूप संत साहित्य में: माया और मोह का प्रतीक

संत साहित्य में नारी का एक रूप माया, मोह और भोग का प्रतीक है। संत कबीर, जो भारतीय संत परंपरा के प्रमुख स्तंभों में से एक थे, ने नारी को कई बार माया और मोह का स्रोत माना। उनके अनुसार, नारी जीवन में सांसारिक बंधनों का कारण है और साधक के लिए उसका त्याग आवश्यक है। कबीर के काव्य में नारी को माया के रूप में देखा गया है, जो व्यक्ति को आत्मिक उन्नति से दूर करती है।

कबीर की पंक्तियां जैसे:

"नारी तो है नर्क की फांसी, कर ले इससे दूरी पासी।"

इसी धारणा को स्पष्ट करती हैं कि नारी का संबंध सांसारिक मोह और भोग से जोड़ा गया है, जिसे आध्यात्मिक साधक को त्यागना चाहिए।

इसी प्रकार, संत तुलसीदास, जिन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना की, ने भी कुछ स्थानों पर नारी को माया और मोह का प्रतीक माना है। उन्होंने भी कहा कि नारी का मोह साधक के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है। हालांकि, तुलसीदास के साहित्य में नारी का स्थान अत्यधिक व्यापक और विविध है, जो केवल माया तक सीमित नहीं है, परंतु इसका एक

पहलू इसी रूप में देखा जा सकता है।

3. नारी: भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक

संत साहित्य में नारी का दूसरा महत्वपूर्ण रूप भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक है। संत मीरा बाई, जो स्वयं एक महिला संत थीं, ने अपने जीवन और काव्य में नारी की भक्ति को एक विशिष्ट स्थान दिया। मीरा बाई ने कृष्ण को अपना आराध्य माना और नारी के रूप में अपने प्रेम, भक्ति, और समर्पण का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। मीरा का काव्य नारी की आध्यात्मिक क्षमता और उसकी भक्ति की शक्ति को प्रदर्शित करता है।

इसी प्रकार, संत ज्ञानेश्वर और एकनाथ ने भी नारी को श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक माना। उनके अनुसार, नारी केवल भोग की वस्तु नहीं है, बल्कि वह आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग की प्रमुख साधक हो सकती है। नारी के भीतर छिपी भक्ति की शक्ति उसे समाज के अन्य वर्गों से भिन्न और उच्च बनाती है। ज्ञानेश्वर ने नारी को आत्मा और परमात्मा के मिलन का माध्यम माना और उसे माया से परे एक उच्च स्तर पर स्थापित किया।

4. संत साहित्य में नारी की सामाजिक स्थिति

संत साहित्य में नारी की सामाजिक स्थिति का भी विशेष उल्लेख मिलता है। संतों ने नारी को केवल आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि समाज में उसकी भूमिका और स्थिति पर भी विचार किया। संत रविदास, जो स्वयं दलित समुदाय से थे, ने नारी के साथ-साथ समाज के अन्य हाशिये पर खड़े वर्गों के उत्थान की बात की। उन्होंने नारी के शोषण और उसके अधिकारों के हनन के खिलाफ आवाज उठाई। उनके काव्य में नारी को एक इंसान के रूप में देखा गया है, जो समाज में समान अधिकारों की हकदार है।

संत कबीर ने भी अपने काव्य में नारी की सामाजिक स्थिति पर विचार किया। उन्होंने नारी को पुरुष के बराबर माना और कहा कि नारी और पुरुष में कोई अंतर नहीं है। संतों के काव्य में नारी के अधिकारों और उसकी स्वतंत्रता का समर्थन किया गया है। यह संत साहित्य का वह पक्ष है, जो समाज में नारी की सामाजिक स्थिति को सुधारने का प्रयास करता है।

5. संत साहित्य में नारी का आध्यात्मिक स्थान

संत साहित्य में नारी का आध्यात्मिक स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। संतों ने नारी को आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक माना। उनके अनुसार, नारी के बिना समाज की आध्यात्मिक प्रगति संभव नहीं है। संतों ने नारी के भीतर छिपी शक्ति, भक्ति, और उसकी आध्यात्मिक क्षमता को पहचाना। संत साहित्य में नारी को केवल सांसारिक बंधनों तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे एक आत्मिक साधक के रूप में देखा गया।

मीरा बाई, जो स्वयं नारी थीं, ने अपनी भक्ति के माध्यम से नारी की आध्यात्मिक क्षमता को उजागर किया। उन्होंने समाज के सभी बंधनों को तोड़ते हुए अपनी भक्ति को सर्वोच्च स्थान दिया और यह साबित किया कि नारी भी आत्मा और परमात्मा के मिलन के लिए योग्य है। संतों के काव्य में नारी को श्रद्धा, भक्ति और प्रेम के प्रतीक के रूप में देखा गया है, जो आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाती है।

परिणाम

संत साहित्य में नारी के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण मिलते हैं। कुछ संतों ने नारी को माया, मोह और भोग का प्रतीक माना, जबकि अन्य ने उसे भक्ति और आध्यात्म का स्रोत बताया। संत कबीर और तुलसीदास जैसे कवियों ने नारी को सांसारिक बंधनों का कारण बताया, जबकि मीरा बाई और ज्ञानेश्वर जैसे संतों ने नारी को भक्ति और समर्पण का प्रतीक माना। नारी की सामाजिक स्थिति पर भी संत साहित्य में गहन विचार किया गया है, और संतों ने नारी को समाज में सम्मान और अधिकार दिलाने की कोशिश की है।

निष्कर्ष

संत साहित्य में नारी का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण और विविधतापूर्ण है। एक ओर, संतों ने नारी को माया और मोह के प्रतीक के रूप में देखा, तो दूसरी ओर उसे भक्ति और आध्यात्म का स्रोत भी माना। नारी को केवल भोग और सांसारिक बंधनों तक

सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे आध्यात्मिक साधक और समाज सुधारक के रूप में भी पहचाना गया। संतों के काव्य में नारी की सामाजिक स्थिति, उसकी आध्यात्मिक क्षमता, और उसकी भक्ति का गहन विश्लेषण किया गया है।

संत साहित्य में नारी को विभिन्न रूपों में देखा गया है—कभी उसे मोह और माया का प्रतीक माना गया, तो कभी उसे श्रद्धा और भक्ति का सर्वोच्च आदर्श माना गया। यह विविधता संत साहित्य की गहराई और उसकी व्यापकता को दर्शाती है। संतों ने नारी को समाज और आध्यात्म दोनों में महत्वपूर्ण स्थान दिया, और यह आज के समाज में भी प्रासंगिक है।

नारी का संत साहित्य में अध्ययन हमें यह सिखाता है कि नारी केवल एक भोग्य वस्तु नहीं, बल्कि वह समाज और आध्यात्म दोनों में योगदान देने वाली प्रमुख शक्ति है। संतों का साहित्य हमें नारी के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है और समाज में उसकी समानता और अधिकारों के लिए संघर्ष करने की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

संदर्भ सूची

1. कबीर, संत. 'साखी और दोहे', वाराणसी: भारतीय विद्या भवन, c1990.
2. मीरा बाई. 'भजनों का संग्रह', जयपुर: राजस्थान प्रकाशन, c1985.
3. तुलसीदास, गोस्वामी. 'रामचरितमानस', नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, c1998.
4. शास्त्री, रामनारायण. 'संत साहित्य में नारी की भूमिका', वाराणसी: ज्ञान पीठ प्रकाशन, c2002.
5. त्रिपाठी, रामनाथ. 'भक्ति साहित्य और समाज', दिल्ली: साहित्य भारती, c2005.
6. रविदास, संत. 'रविदास की वाणी', लखनऊ: उत्तर प्रदेश साहित्य परिषद, 1999.
7. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. 'हिंदी साहित्य का इतिहास', नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, c1987.